नियंत्रण और मापबन्दी

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओ देसाओ अंक ८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद ९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २१ अप्रैल, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

गोवधके खिलाफ अुपवास

अहमदाबादमें मार्चके पहले सप्ताहमें श्री अर्जुन भगत नामके सज्जनने गोवध-बन्दीके लिअे आमरण अुपवास शुरू किया था। बादमें शहरके प्रमुख व्यक्तियोंके समझाने-बुझाने पर अुन्होंने अपना अुपवास तोड़ दिया। लेकिन अिस सिलसिलेमें अखबारोंमें प्रकाशित समाचारोंके अनुसार शहरमें कुछ गड़बड़ी और शांतिका भंग भी हुआ।

अिस प्रसंगको लेकर मैं अपने कुछ विचार प्रकट करना चाहता हूं।

मेरी नम्र रायमें गोवध-बन्दीके लिअे अिस किस्मका आन्दोलन औंधे सिरे पर शुरू किया जाता है। गोवध न हो, यह अहिंसाका अेक दुय्यम हिस्सा है। वह 'प्राणाघात' न करनेके धर्मका अेक अंश है। गायके विषयमें अहिंसाधर्मके आचारका मुख्य अंश गोमांस-भक्षणका त्याग करना है।

मैं अिस विचारका हूं कि विविध कारणोंसे हमारे देशके सब लोगोंको गोमांस निषिद्ध मानना चाहिये। अिसमें हिन्दू-मुसलमान ओसाओ या गोरे-कालेका भेद करनेकी जरूरत नहीं है। जिस तरह कओ कौमोंमें घोड़ेका, कओमें सुअरका मांस वर्ज्य समझा जाता है, अुसी तरह भारतमें यहांके करोड़ों निवासियोंकी दृष्टिमें गायका मांस खाना अयोग्य माना जाता है। अिसलिअे भारतके सब लोग अितना मान लें तो बस है। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा दूसरी कओ दृष्टियोंके समवायसे अुत्पन्न यह भारतकी अेक रूढ़ि है, अैसा समझना चाहिये।

यह याद रखना चाहिये कि गोमांस खानेवाले केवल मुसलमान नहीं हैं। ओसाओ — गोरे और भारतीय दोनों — को भी अुसका परहेज नहीं। फिर भी मुसलमानों और देशी ओसाअियोंमें से अधिकांश तो रोज मांसाहार कर भी नहीं सकते, और अुसका आग्रह भी नहीं रखते। वे तीज-त्यौहारको मांसाहारकी छूट रखते हैं, बस अितनी बात है। पारसियोंमें भी अधिकांश हिन्दुओंकी ही तरह गोमांससे घृणा करते हैं। कुछ सुधरे हुअे पारसियोंने भले ही यह परहेज छोड़ दिया हो।

सिर्फ गोरे ओसाअियोंको गोमांससे कोओ परहेज नहीं है, बल्कि प्रेम है अैसा कह सकते हैं। अुनमें भी कओ अपवाद रूप व्यक्ति हैं। दूसरी तरफ, हिन्दुओंमें ही कओ गोमांस खानेवाले हैं। हां, कतल की गयी गायका नहीं, मृत गायका ही खाते हैं। धनवान मुसलमान या ओसाओके यहां नौकरी करनेवाले हिन्दू बावरची वगैरा कभी-कभी कतल की हुओ गायका मांस भी खा लेते हैं। अिसके सिवाय, जो कतल की गयी या मृत गायका मांस नहीं खाते, अैसे हिन्दू भी गायें और भैंसें कसाअियोंको बेचते हैं, और यहां तक कि गोमांसका व्यापार कराते हैं। मुरदार मांस खानेवाले तो दरिद्रतामें डूबे हुअे कुछ हरिजन ही हैं, पर कसाअियोंको गाय-भैंस बेचनेवाले तो सभी वर्गोंमें हैं।

अिसलिअे यदि हम गोवध बन्द करना चाहते हैं, तो अिस दिशामें हमारा पहला महत्त्वका कदम यह होगा कि हम गोमांस खानेवालोंसे अुसका त्याग करनेको और बेचनेवालोंसे बेचना बन्द करनेको कहें। खाना और बेचना बन्द हो जाय, तो गोवधकी कमर ही टूट जाय और प्रश्नका रूप ही बदल जाय।

अुसके बाद शेष सवालका हल अलग ढंगसे सोचना होगा। लेकिन आज तो अुसके लिअे भूमिका तैयार नहीं है, अिसलिअे अुसकी चर्चा अभी प्रासंगिक नहीं है।

अिसलिअे मेरा तो श्री अर्जुन भगत तथा दूसरे सच्चे गोभक्तोंसे यह विनय है कि वे सब जातियों और धर्मोंके लोगोंमें घूमफिर कर लोगोंको पहले गोमांस छोड़नेके लिअे समझायें। अुसमें कतल और मुरदारका भेद नहीं करना है। फिर हिन्दू मात्रको समझाना है कि कोओ कसाओको गाय न बेचे। यदि वे अपने अिस विचारमें सफल हों, और लोग गोमांस छोड़ने तथा गाय कसाअियोंको न बेचनेकी प्रतिज्ञा ले लें, तो वे जो काम करनेकी अिच्छा करते हैं वह कानूनके बिना ही सिद्ध हो जाय। श्री अर्जुन भगत जैसे गोभक्त अपना गोवध बन्द करनेकी कोशिशकी जगह गोमांस खानेवालोंसे अुसे छुड़वानेका प्रयत्न करें, तो वह स्वागतके योग्य होगा। भूतकालमें संत पुरुषोंने लोगोंसे मांस-मदिराका त्याग अिसी रीतिसे कराया था। अिसी तरह समझाने पर बड़े-बड़े बादशाहोंने गोमांस छोड़ दिया, अैसे अुदाहरण मौजूद हैं। यह काम राजपुरुषोंसे होनेका नहीं है; अिसे तो संत ही कर सकते हैं।

हमारे देशके जो लोग गोमांसको निषिद्ध नहीं मानते, अुनसे भी मेरी यह विनती है कि वे भी अिस देशकी परम्परा, रीति-नीति आदिका विचार करें। जिन करोड़ों लोगोंके समाजमें वे रहते हैं अुनकी भावनाओंका आदर करें, सोचें कि गाय, बैल, भैंस आदि देशकी सम्पत्ति हैं, और राजीखुशीसे गो-मांसका त्याग कर दें। अुनका यह काम भाओचारा बढ़ानेका और भूतदयाका अेक बड़ा अुदाहरण होगा। अिसके सिवा चौका-भेद और जात-पांतके बन्धन तोड़नेमें भी अिस कामसे बड़ी मदद होगी।

मैं आशा करता हूं कि गोभक्त अिस सवाल पर अिस दृष्टिसे विचार करेंगे। वे अिस दृष्टिसे विचार करें और गोरक्षाके अिस विधायक पहलूकी सिद्धिमें अपना बल लगायें, तो शक नहीं कि गोवधकी समस्याकी जड़ ही कट जाय। अलबत्ता, अिसमें किसी पर धमकी, दबाव या दूसरे हिंसक साधनका प्रयोग नहीं किया जा सकता। अुससे गोवध अटकना तो दूर रहा अुलटा मानव-वध ही बढ़ जायगा।

वर्धा, ३-४-'५१

कि० घ० मशरूवाला

नियंत्रणके खिलाफ फरियाद

मैं अेक सच्चा किसान हूं। मेरे पास चालीस बीघा जमीन है। जमीन अूंचे दरजेकी है। सस्ताअीके जमानेमें खाते-पीते साल आखिरमें दो सौ-चार सौ रुपये अच्छी तरहसे बच जाते थे। जमीन वही है, फिर भी जबसे नियंत्रण आया है, तबसे प्रतिवर्ष दो सौ-चार सौ रुपयेकी नुकसानी ही होती है। गत वर्ष करीब ४५० रु० का घाटा आया। अुसके अलावा बैलको खिलाअी मेथीका खर्च अलग। अेक बैलकी जोड़ीको जाड़ेके मौसममें ढाअी मन मेथी चाहिये। मेथीका भाव ४० रु० मनका है। अेक मन मेथीके लिअे चार मन ज्वार बेचना चाहिये। बैलकी दूसरी खुराक गवार है। ज्वारका भाव मेथी और गवारके अनुपातमें रहना चाहिये। ज्वारका कमसे कम भाव १६ रु० मन होना चाहिये, तब किसान अपने आय-व्ययको बराबर कर सकेगा।

यदि मैं अपनी ज्वार कालाबाजारमें बेचता, तो मुझे ३८७ रु० ८ आ० ज्यादा मिलते। मंत्रिमंडलमें यदि कोअी सच्चा किसान होता, तो हमारी दशा अैसी न होती। हमें कालाबाजार करनेकी अिच्छा नहीं है। लेकिन नियंत्रणसे लोग त्रस्त हो गये हैं। नियंत्रणके कारण जनताको कैसी युक्तियां काममें लानी पड़ती हैं, यह मैं बताना चाहता हूं।

शक्करकी ही बात लीजिये। जब शक्कर पर नियंत्रण नहीं था, तब चाहे जितनी शक्कर १४ आनेसे १रु० ४आ० सेर तक मिलती थी। गुड़के बारेमें भी अैसा ही हुआ। जिस चीज पर नियंत्रण होता है, वह महंगी हो जाती है। शक्कर भी कालाबाजारमें जितनी चाहिये अुतनी मिलती है। नियंत्रणके कारण लोग नीति-भ्रष्ट हुअे हैं, कारण यह है कि लोग हलवाहे (सालदार) या दूसरे गरीब आदमियोंसे कार्ड ले लेते हैं, कार्डके बदलेमें, अुस कार्डमें दर्ज आदमियोंके हिसाबसे कार्ड देनेवालेको प्रति आदमी आठ आना या अेक सेर ज्वार मुफ्तमें मिलती है। कार्डमें दो आदमी हों, तो कार्डके मालिकको अेक रुपया या दो सेर ज्वार मुफ्त मिलती है। अिस तरहकी युक्तियां किसानको क्यों करनी पड़ती हैं? क्योंकि अुनको जो रेशन दिया जाता है, वह काफी नहीं होता। हमारी सरकारने प्रति आदमी छः औंस अनाज देना तय किया है। लेकिन क्या छः औंस अनाज खाकर सात सात साल तक प्रजा जिन्दा रह सकती है? हरगिज नहीं। अब तक प्रजा जिन्दा रही अुसका कारण यह है कि छोटेसे छोटे मजदूरसे लेकर मंत्री तक सब लोगोंने कालाबाजारका अनाज खाया है।

हम तो मानते हैं कि हमारी सरकारके कानूनका पालन करना हमारा फर्ज है। लेकिन रोज तीन बार भोजनमें छः औंससे जितना ज्यादा अनाज हम खाते हैं, अुतने अंशमें हमें अपनी सरकारके दोषी होना ही पड़ता है।

(अेक गुजराती पत्रका संक्षेप) **अेक किसान**

"सर्वोदय यात्रा"

श्री० विनोबाकी शिवरामपल्ली-यात्राके ता०६-३-'५१ से ता० २८-३-'५१ तकके पूरे वृत्तान्तकी पुस्तक अूपर लिखे नामसे श्री० रिषभदास रांका (अध्यक्ष, भारत जैन महामण्डल, वर्धा) की तरफसे प्रकाशित हो चुकी है। कीमत १ रुपया है। अिसी तरह अिसके आगेकी यात्राकी भी पुस्तक वे प्रकाशित करेंगे। श्री० विनोबाके प्रवचनोंको अेक साथ पुस्तकके रूपमें पढ़नेके लिअे यह अुपयुक्त साबित होगी। अुसके शुरूमें श्री० वल्लभस्वामीने यात्राकी प्रस्तावना और अन्तमें श्री० दत्तोबा दास्तानेने यात्राका अितिवृत्त भी जोड़ा है। अिससे यात्राका साधारण चित्र भी मिल जाता है।

वर्धा, १०-४-'५१ कि० घ० म०

बनारसकी हरिजन-बस्तियां

१३ फरवरी १९५१को मैंने १ से ४ बजे तक बनारस शहरकी ५ हरिजन-वस्तियोंको देखा।

१. कटुआपुरा: अिस बस्तीमें ८० जायसवाल परिवार रहते हैं। कुछ तो जूते सीते हैं और कुछ लोग रिक्शा चलाते हैं। अेक दो खासे खाते-पीते परिवार भी हैं। साधारणतया मकान भी अुनके अच्छे हैं। लगभग २५ बच्चे अिस बस्तीमें पढ़ते हैं, जिनमें कुछ लड़कियां भी हैं। पानीकी यहां भारी शिकायत है। लोगोंने कहा कि यदि म्युनिसिपल कमेटी पाअिप लाअिन थोड़ी बढ़ा दे, तो बहुतसे परिवार अपने घरोंमें नल अपने खर्चसे भी लगवा लेंगे। कमेटीको अुनकी अिस अुचित मांग पर ध्यान देना चाहिये। गन्दा व बरसातका पानी निकलनेकी नालीमें भी सुधारकी आवश्यकता है। सारे मोहल्लेका पानी सड़ककी तरफ अिकट्ठा हो जाता है। बस्तीके बिलकुल निकट अेक कूड़ा-घर है, जिसमें सड़ा-गला हुआ खाद भरा हुआ है। मालूम होता है कि यह कूड़ा-घर महीनोंसे साफ नहीं हुआ है, अन्यथा अितना गला हुआ खाद वहां नहीं रहना चाहिये था। अिसकी सफाअी तो हर दूसरे तीसरे रोज होनी चाहिये। और अूपरसे ढंकनेके लिअे भी कुछ होना जरूरी है। बस्तीमें रोशनीका अिन्तजाम भी ठीक नहीं है। अंधेरी रातमें तंग गलियोंमें आना-जाना कठिन हो जाता है। अिस बस्तीके बिलकुल पास अेक कसाअीघर है, जो चारों ओरसे आधा खुला रहता है। बस्तीकी तरफसे बड़े-बड़े पशुओंका मांस साफ दिखाअी देता है। और बड़ी आम सड़कसे भी। गीध मांसके लोथड़े घरों पर फेंकते रहते हैं। सामनेके पार्कमें जो कुआं है, अुसका अुपयोग भी अन्य जनता व हरिजन अिसी कारण नहीं करते कि कसाअीघर अुसके सामने पड़ता है। यहांसे कटते हुअे पशुओंका बीभत्स दृश्य देखा जा सकता है। जायसवाल हरिजनोंके लिअे विशेषतया तथा अन्य हिन्दुओंके लिअे साधारणतया अिस खुले हुअे कसाअीघरको काशीका कलंक कहा जा सकता है। अिसे अिस स्थानसे या तो म्युनिसिपैलिटी हटा दे या फिर दीवार खड़ी करा दे। ताड़ीखाना भी अिसी बस्तीके पास है, जो बहू-बेटियोंके हकम बहुत बुरा है।

२. चेतगंज, (सेनपुर): यह बस्ती म्युनिसिपैलिटी आफिसकी नाकके बिलकुल नीचे है। बनारसकी दूसरी बस्तियोंके मुकाबले शायद यही सबसे ज्यादा गन्दी है। यहां लगभग २० डोम परिवार कमेटीकी २० कोठरियोंमें रहते हैं। कुछ डोमोंने बिना अिजाजतके भी कोठरियां बना ली हैं। कोठरियां बहुत तंग हैं। फर्श अुखड़ा पड़ा है। आंगन बादमें डोमोंने कहीं-कहीं बना लिया है। बस्ती व आसपासका स्थान गन्दगीसे भरा हुआ है, मानो शहरको साफ रखनेवाले अिन डोमोंके मोहल्लेको साफ रखने या रखानेकी म्युनिसिपल कमेटीकी कोअी जिम्मेवारी ही नहीं है। म्युनिसिपल स्कूल हालांकि पास है, फिर भी डोमोंके बच्चे अुसमें पढ़ने नहीं जाते।

कुआं बस्तीके पास है, जिसमें अन्य हरिजन भी पानी भरते हैं। परन्तु निम्नतम समझे जानेवाले डोमोंको अुस पर नहीं चढ़ने दिया जाता। रोशनीका कोअी अिन्तजाम नहीं है।

३. पान दरीबा (औरंगाबाद): यहां पर मेहतरोंके ६-७ घर हैं। मकान ठीक हैं, क्योंकि ये लोग म्युनिसिपल कामके अतिरिक्त बेंडबाजोंसे अच्छी आमदनी कर लेते हैं। बच्चे भी अिनके सामान्य स्कूलोंमें पढ़ने जाते हैं।

४. पितरकुण्डा: ५० घर अिस बस्तीमें मेहतरोंके और ६ घर डोम लोगोंके हैं। सब मिलेजुले बस्तीमें रहते हैं। कीर्तन भी मिलकर किया करते हैं। अेक कमरा धर्म-चर्चा, मद्य-निषेध प्रचार व मनोरंजनके लिअे किराये पर ले रखा है। रविवारको रामायण भी होता है। नवयुवकोंका सुधारकी ओर ध्यान मालूम दिया। लगभग २६ बच्चे

बिना भेदभावके सामान्य स्कूलोंमें पढ़ने जाते हैं। श्री मुनीश्वर बाबू सरकारकी ओरसे अिस बस्तीमें अुत्थान कार्य करते हैं।

परन्तु अिन लोगोंको पानीका कष्ट है। डिपोके बड़े नलका पानी भी अिन्हें मजबूरन लेना पड़ता है। म्युनिसिपैलिटीके मकान अेक-दो हैं, वे भी टूटे हुअे। छत गिर गअी है। मरम्मत नहीं करवाअी गअी। अधिकतर लोग मुसलमानोंके मकानोंमें किराये पर रहते हैं। टूटे हुअे मकानों तकका किराया ८ या ९ रुपये तक माहवार देना पड़ता है। टट्टी साफ-कराअीके पैसे खानगी घरोंसे आजकलकी भारी महंगाअीमें भी सिर्फ दो आने या तीन आने माहवार मिलते हैं!

५. **मलतैया हरिजन बस्ती:** म्युनिसिपल कमेटीका बोर्ड लगा हुआ है, जिस पर 'हरिजन बस्ती' लिखा है। परन्तु यह बस्ती केवल दो मकानोंकी है। जिनमें तीन-तीन कमरे हैं। खिड़कियां हैं पर बिना किवाड़ोंकी। छतें बरसातमें टपकती हैं। लगभग ४५ परिवार अपनी-अपनी झोंपड़ियां डालकर जैसे-तैसे रह रहे हैं। सुअर भी ये लोग पालते हैं। बहुत ही गन्दी बस्ती है।

मालूम हुआ, बनारस म्युनिसिपल कमेटीमें लगभग १५०० मेहतर व डोम सफाअीका काम करते हैं। नअी भरती ३० रु० मासिकसे होती है और पुरानोंको ४० रु० मासिक मिलता है। कमर पर और कभी-कभी सिर पर भी टट्टियोंसे मैला अुठाकर ढोनेका अत्यधिक बुरा रिवाज बनारस शहरमें भी देखा जाता है। नगरपालिका कैसे सहन करती है अिस बुरेसे बुरे चलनको! अिसे जल्दसे जल्द हटाकर छोटे-छोटे हाथ-ठेले मैला ढोनेके लिअे चालू करा देने चाहियें। नगरपालिका अिस आवश्यक सुधारको तुरन्त हाथमें ले ले, यह अुससे मेरा अनुरोध है।

वियोगी हरि

टिप्पणियां

हम क्या करें?

बिहारके अेक भाअी कण्ट्रोलके बारेमें बड़े दुःखके साथ शिकायत करते हुअे कहते हैं कि अिससे चोरबाजारी और घूसखोरी बढ़ती है और लोग बड़े परेशान हो रहे हैं। किसी चीज पर कण्ट्रोल लगते ही अुसके दाम बढ़ जाते हैं, बाजारसे वह चीज लापता हो जाती है और अुसका चोरबाजार शुरू हो जाता है। आगे वे कहते हैं, "मनुष्य स्वार्थी बनते गये — क्या आम जनता, क्या सेवक।" और अन्तमें अफसोसके साथ लिखते हैं:

> "भगवान हम लोगोंको सुबुद्धि दें कि आत्मशुद्धि, अुपवास, सत्याग्रह द्वारा हम महात्मा गांधीके बताये हुअे रचनात्मक कामोंको आगे बढ़ाते चलें।"

मैं मानता हूं कि अैसी दशा आज कअियोंकी होगी। और वे गांधीजीकी बातोंको अिसी तरह याद करते होंगे। परन्तु अिससे काम नहीं चल सकता। ठोस काम होना चाहिये। अुपवास और सत्याग्रहकी यहां जरूरत नहीं है, न कोअी गुंजाअिश। जरूरत है आत्मशुद्धिकी और कामकी। चोरबाजारी और घूसखोरी हमारी आत्मशुद्धिकी मात्रा बताती है। हम क्यों अपना व्यवहार शुद्ध न बनावें? अिसकी बड़ी शर्त यह है कि हम कमसे कम कपड़ेके बारेमें स्वाश्रयी बनें। तब ही हम चोरबाजारीसे बच सकते हैं।

अहमदाबाद, १७-४-'५१ **म० देसाअी**

कपासकी घरेलू अुपज

वस्त्र-स्वावलम्बनमें आज सबसे बड़ी बाधा तो कपासकी कमीकी है। खेतकी कपास सब जगह नहीं हो पाती। अुस पर बाजारकी घटा-बढ़ीका बुरा-भला असर होता रहता है। यह समय पर अुचित मात्रामें और अच्छी हालतमें नहीं मिल पाती। वर्तमान अनाजकी गंभीर समस्याको देखते हुअे कपासकी काश्तमें अच्छी जमीन अधिक अटकाना अुचित न होगा। अैसी हालतमें हमारे लिअे सबसे आसान अुपाय यही है कि हम अपने घरके आंगनमें वृक्ष-कपास अुपजावें। वृक्ष-कपास हर प्रकारकी जमीन और आबोहवामें हो सकती है। और यदि ठीक प्रबन्ध रहा तो अुसके कुछ ही पौधे हमारी वस्त्रकी जरूरत पूरी कर सकते हैं।

वृक्ष-कपासके लिअे दो फूट गहरे गढ़े ६ से ८ फूटके अन्तर पर अप्रैल-मअीमें खोदकर अुन्हें महीनाभर धूप-हवा लगने दी जाय। अुसके बाद गोबर-मूत्रका खाद या सोनखाद और राख मिट्टीमें सम प्रमाणमें मिलाकर गढ़ा पूरा भर दिया जाय। फिर हरअेक गढ़ेके मध्यमें ६ अिंचके अन्तर पर दो-तीन बीज अेक अिंच गहरे बोये जायं। अेक माहके बाद अुनमें से जो पौधा कमजोर हो अुसे निकाल दिया जाय। अिस बातका खयाल रहे कि कपासके लिअे जमीन झीलवाली या अूंचे बंधानकी न हो जिसमें नमी बनी रहे। जमीनका पानी शीघ्र निथर जाना चाहिये।

बीजके लिअे अपने यहांकी सारी स्थिति यानी जमीन, आबोहवा, सरदी-गरमी और वर्षा आदि सब बातें बताकर अुसके अनुकूल वृक्ष-कपासकी जातिका बीज लिया जाय।

दादाभाअी नाअिक

नोट: आवश्यक जानकारी श्री दादाभाअी नाअिक, संयोजक, कपास समिति, सेवाग्राम — को लिखनेसे आपको समय पर मिल जावेगी। मध्य तथा अुत्तर भारतमें कपास बोआअीका समय नजदीक आ रहा है। अतः जो भाअी कपास स्वावलम्बनकी दिशामें प्रयत्नशील हैं, वे आवश्यक पत्र-व्यवहार अभीसे शुरू कर दें।

व्यवस्थापक,
('कताअी मंडल पत्रिका' से) कताअी मंडल पत्रिका

"जि कियू जि सोकू"

[कोरा ग्रामोद्योग केंद्र, बोरीवलीके श्री प्राणलालभाअी कापड़ियाके साथ अुनके जापानके साथी श्री अुचियामा गीअीचि ता० २९ मार्चको सेवाग्राम आये थे। खादी-विद्यालयमें चलनेवाली सारी प्रवृत्तियां अुन्होंने देखीं। खादी-विचारके बारेमें अुनसे चर्चा हुअी। चर्चाके दरमियान अुन्होंने जापानकी जो चंद बातें बताअीं, अुनमें से मुख्य हम नीचे दे रहे हैं। — संपादक]

जापानके देहाती लोगोंमें अेक कहावत है:

"जि कियू जि सोकू" यानी "मैंने तैयार किया मुझे दिया"।

गांधीजीने भी स्वावलम्बनका सरल अर्थ अिसी भाषामें आप लोगोंको सिखाया है। हरअेक व्यक्ति अुस पद्धतिसे कार्य करता रहा, तो व्यवस्थाके साथ-साथ वह देशकी तरक्की हंसते-खेलते कर सकता है।

देहातियोंमें दूसरी भी अेक कहावत है:

"कुवांगा हिकारोबा कुनिहिकारू" यानी "हलका फल जितना चमकेगा, अुतना ही देश चमकेगा।"

यदि हम अपना हल खाली पड़ा रखेंगे, तो देश भी कंगाल अेवं गिरा हुआ ही रहेगा।

कैंप, सेवाग्राम, ३०-३-'५१ **अुचियामा गीअीचि**
('कताअी मंडल पत्रिका' से)

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ७-१२-० डाकखर्च ०-२-०

सरदार वल्लभभाअी

(पहला भाग)

लेखक — **नरहरि परीख**

अनु० — **रामनारायण चौधरी**

की० ६-०-० डाकखर्च ०-१३-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद — ९

हरिजनसेवक
२१ अप्रैल १९५१

नियंत्रण और मापबन्दी

यदि अन्न परसे नियंत्रण बिलकुल अुठा लिया जाय और रेशनकी दूकानें बंद कर दी जायें, तो यह आशंका प्रगट की जाती है कि जिनके साधन स्वल्प हैं, अुन लोगोंको बड़ी परेशानी होगी। दूसरी तरफ, जब तक रेशनकी दूकानोंसे अितना अन्न बांटनेकी सरकारकी क्षमता नहीं है जितना रोजकी अुचित जरूरत पूरी करनेके लिअे चाहिये, तब तक खुला बाजार बंद करनेकी कोशिशका यही नतीजा होगा कि चोरबाजार, भ्रष्टाचार और अनीति पनपेगी। जनतासे छोटी-मोटी कमियां सहनेके लिअे कहा जा सकता है। लेकिन यह निवेदन थोड़े समयके ही लिअे कामयाब हो सकता है, ज्यादा समय तक वह नहीं चल सकता। कमियां जहां छोटी नहीं बड़ी हैं, ज्यादा समय तक रहती हैं, और जब अैसे लक्षण मौजूद हैं, जिनसे जाहिर होता है कि काफी अनाज या तो अमीरोंने भर रखा है या गुप्त भंडारोंमें गायब कर दिया गया है और अगर अूंची कीमत देना स्वीकार हो तो वह मिल सकता है, तब अगर अेक सामान्य जरूरतमन्द ग्राहक अपनी जरूरत चोरबाजारसे खरीदे या अमीरोंसे द्वेष करे, तो हम अुसे ज्यादा दोष नहीं दे सकते। यह साधारण जरूरतमन्द ग्राहक अुन पैसेवाले और होशियार लोगोंसे भिन्न है, जो अपनी किसी तात्कालिक जरूरतकी पूर्तिके लिअे नहीं, बल्कि भविष्यमें कभी कोअी कमी हो जाय तो क्या होगा, अिस डरसे चुपचाप अपनी आवश्यकतासे बहुत ज्यादा माल अिकट्ठा कर रखते हैं।

अूपर अेक अैसे सामान्य ग्राहकके पक्षका बयान हुआ है, जो चोरबाजारसे खरीदी करने पर मजबूर होता है। वह भावोंके नियंत्रण और रेशनिंगके खिलाफ नहीं है। वह तो अुनकी मांग भी करता है, लेकिन साथ ही यह भी चाहता है कि रेशनिंगमें अुसे चीज अितनी मिलनी चाहिये कि अुसकी जरूरत पूरी हो जाय और भावोंके नियंत्रणका पालन सरकार पूरी तरह करवाये। रेशनिंगसे असुविधा तो होती ही है, साथ ही अगर वह अितना नाकाफी हो कि अुसे कालाबाजारकी शरण लेनी ही पड़े, तब वह अिस पद्धतिको नापसन्द करता है।

दूसरी ओर अन्न या कोअी दूसरी अुपयोगी चीज पैदा करनेवाला भी अपना माल कालाबाजारमें बेचनेकी अपनी विवशताकी सफाअीमें अैसी ही दलील करता है, और सारा दोष अुसके माल पर लादे गये नियंत्रणों पर डालता है। अिसी अंकमें दूसरी जगह अेक किसानकी गुजराती चिट्ठीका सारांश दिया गया है; अुसमें अिस पक्षका बयान आया है।

यह पत्र-लेखक किसानका पक्ष पेश करता है। किसानकी शिकायत यह है कि अुसकी अुपजकी अूपरी कीमत अुसकी अनकूलतासे कम स्तर पर बांधी गयी है; साथ ही अुसे जिन चीजोंकी आवश्यकता होती है, अुन्हें अुनके बाजारमें प्रचलित दामोंकी अपेक्षा कम दाम पर और काफी मात्रामें दिलवानेकी कोअी व्यवस्था नहीं की गयी है। और यही वजह है कि अुसे तकलीफ हो रही है, और अुसकी अुपजके ग्राहकोंको भी तकलीफ हो रही है।

शक्करका व्यवसायी भी अैसी ही शिकायत करता है। वह कहता है कि सरकार द्वारा बांधा गया शक्करका अूपरी भाव अुसे लाभपूर्वक शक्करका अुत्पादन करनेके लिअे अत्यंत कम पड़ता था। शक्करका अूपरी भाव बांधनेके साथ-साथ अीखके दाम भी अुसकी अनुकूलताके स्तर पर तय किये गये होते, तो ठीक होता। लेकिन अैसा नहीं किया गया। अिससे परिणाम यह आया कि वह शक्करका काफी अुत्पादन नहीं कर सका और अुसे तथा ग्राहकोंको असुविधा हुअी। तो वह चाहता है कि या तो अीखकी कीमत पर भी कड़ा नियंत्रण होना चाहिये, या शक्कर परसे नियंत्रण अुठ जाना चाहिये। अगर अीखकी कीमतका सफल नियंत्रण किया जा सके तो गुड़के नियंत्रणकी जरूरत नहीं होगी।

यही हाल कपड़ेके अुद्योगका है। यह अुद्योग चलानेवाले भी चाहते हैं कि या तो कपड़ा नियंत्रणसे मुक्त कर दिया जाय, या फिर कपास अुन्हें अनुकूल भाव पर दिया जाय।

वनस्पतिके व्यवसायी मूंगफली और पटसनके व्यवसायी पटसनके बारेमें भी शायद यही दलील देंगे।

और किसान, जो अन्न, कपास, मूंगफली या पटसन आदि पैदा करता है, चाहेगा कि अुसके माल पर लगाये गये सारे नियंत्रण या तो अुठा लिये जायें, या फिर अुसे लोहा, सीमेंट, मवेशीके लिअे दाना-चारा, पानीके लिअे अेंजिन-पम्प, और जलानेके लिअे तेल, लकड़ी आदि भी सस्ते भाव पर सुलभ कर दिये जायें।

मतलब यह कि हरअेक आदमी जो चीजें अुसे चाहियें अुनकी कीमतोंका नियंत्रण और अैसी व्यवस्था चाहता है कि, वे अुसे पर्याप्त मात्रामें मिलती रहें, लेकिन अपना माल अपनी कीमत पर बेचनेकी आजादी मांगता है। अिस तरह देखें तो श्री० हरिकृष्ण मेहताबका यह कहना सच मालूम होता है कि हरअेक व्यक्ति ग्राहककी हैसियतमें नियंत्रणका हामी है और अुत्पादककी हैसियतमें अुसका विरोधी। अिसके सिवा अूपरी तौर पर यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि दो-चार फुटकर चीजोंका नियंत्रण करना अुचित नहीं है। अुससे सवाल हल नहीं होता, बल्कि अुलझन बढ़ती है। अगर हम खेतीके मालकी कीमतोंका सफल नियंत्रण करना चाहते हैं, तो हमें किसानकी सारी आवश्यकताओंको भी सस्ता कर सकनेका खयाल रखना होगा, यानी आजकी व्यवस्थामें माल लाने-ले जाने, बाजारमें अुसे बेचने आदिकी सुविधा देनी होगी। अिसके अलावा बैल, खाद, पानी, खेतीके औजार, अींधन, कपड़ा तथा अैसी ही कितनी दूसरी चीजें खेती-जीवीके लिअे सस्ती और सुलभ कर देनी पड़ेंगी। यदि खुले व्यापारकी राहसे किसानका व्यवसाय अुसके लिअे लाभ-प्रद बनाया जा सके, तो सारी जनताके आय-व्ययका हिसाब दुरुस्त हो सकता है। लेकिन जब अिस कामके लिअे नियंत्रणोंके कृत्रिम अुपायका आश्रय लिया जाता है, तब हालत अेक सितारकी-सी होती है, जिस पर कहीं भी अंगुली रखी जाय, सारे तार झनझनाने लगते हैं, और अिसलिअे जब तक अुसके सब तारोंको ठीक स्वरमें नहीं साध लिया जाता, तब तक संगीतकी जगह शोरगुल ही पैदा होता है।

यदि माल पैदा करनेवाले नियंत्रण नहीं चाहते, तो बड़ी हद तक यह अुनके ही हाथमें है। माल पैदा करनेमें वे मुनाफेकी अेक खास मात्राका, जिसे काम करनेकी प्रेरणा देनेके लिअे वे जरूरी समझते हैं, हठ करते हैं। अुन्हें अैसा नहीं करना चाहिये। क्योंकि अगर वे ज्यादा मुनाफा चाहते हैं, तो अुन्हें भी अपने मजदूरों और कर्मचारियोंको अुतना वेतन देनेके लिअे तैयार होना चाहिये, जितना वे अपनी प्रेरणाके लिअे जरूरी मानते हैं। अिसका अर्थ यह हुआ की कीमतोंकी घटती-बढ़तीके साथ ही साथ लगातार आय भी घटती-बढ़ती रहे।

यदि अिस दुष्ट चक्रको तोड़ना है, तो अेक ही बिन्दु है जहां अिस व्यूहका भेदन हो सकता है: व्यवसायी अपने मुनाफेकी मात्रा स्वेच्छापूर्वक कम कर दें, मजदूर अपना वेतन और सरकार अपना कर, पूरा नहीं तो अंशतः मालकी शकलमें लेना कबूल करें। हमारी वर्तमान आर्थिक कठिनाअियोंकी जड़में कामके लिअे पैसेको ही प्रेरणा माननेकी विनाशक भूल है।

प्रश्न अन्ततः नैतिक है। पैसे पर निगाह रखकर काम करना सुख और विलासके कृत्रिम और भड़कीले जीवनकी अिच्छा जाहिर करता है। हमें आत्म-संयम और बाहरी नियंत्रणमें से किसी अेकका चुनाव करना है। यदि हम आत्म-संयम नहीं स्वीकार करते, तो जब तक सरकारमें शासन करनेकी शक्ति बाकी है, बाहरी नियंत्रणोंको रोका नहीं जा सकता। नियंत्रणोंका अमल करवानेमें सरकारको, हमारे जैसे अत्यन्त व्यक्ति-प्रधान समाजमें, हमेशा विरोधका सामना करना पड़ेगा। तब हो सकता है कि धीरे-धीरे या कभी अुत्पातकी हालतमें अेकाअेक हुल्लड़, मारपीट और दंगोंकी नौबत आ जाय। अिन हुल्लड़ करनेवालोंको हम अपनी सुविधाके अनुसार साम्यवादी या बदमाश या और कोअी नाम दे सकते हैं। लेकिन बुराअीकी जड़ सुख और जीवनके प्रति हमारे नितान्त व्यक्ति-प्रधान दृष्टिकोणमें और समाजके प्रति अपने कर्तव्यकी अवमाननामें है। अेशियाअी देशोंकी कोअी भी सरकार, पश्चिमी देशोंकी सारी मददके बावजूद अिन अुपद्रवोंको रोक नहीं सकेगी। अिन हिंसक अुत्पातोंको रोकना सचमुच तो अमीर व्यवसायियोंके, माल पैदा करनेवालों और खर्च करनेवालोंके हाथमें है। अिस संकटके निवारणका यही अेक रास्ता है कि हम अपनी सुख और संग्रहकी वृत्तिका संयम करें, और जीवनकी व्यक्ति-प्रधान दृष्टिका शोधन करें। हमें सबके लिअे, सर्वजनहिताय काम करना सीखना चाहिये; सबके लिअे जियें, अपना सुख सबको बांटें और सबके दुःखमें हिस्सा लें। दूसरे शब्दोंमें हमें शुद्ध-व्यवहार, समाश्रय और सर्वोदयकी जीवन-पद्धति अपनानी चाहिये।

वर्धा, ७-४-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

खुराक और संस्कृति

हमारे राज्योंकी कुछ राजधानियोंमें आजकल संस्कृतिके बारेमें जो प्रचार और अूहापोह अेकाअेक चलने लगा है, वह बताता है कि हवा किस तरफ बह रही है। विचारशील लोगोंको अिस चीजका अध्ययन करना चाहिये, क्योंकि अिसका हमारी स्वतंत्रताके अदय और विकासके साथ तथा हमारे देशमें सच्ची लोकशाहीकी प्रगतिके साथ बहुत ही नजदीकका सम्बन्ध है।

अिस सम्बन्धमें दिल्लीके 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' ने अपने ता० १७-३-'५१ के अंकके अग्रलेखमें नीचेका जो मत प्रकट किया था वह विचार करने जैसा है:

> "संस्कृति अेक अैसी वस्तु है, जिसका विकास परिषदें भरनेसे और अध्ययन तथा संशोधनकी संस्थाअें कायम करनेसे नहीं किया जा सकता। संस्कृति मूलतः प्रजाकी जीवन-पद्धतिका अेक आविष्कार है। अैसी कोअी राष्ट्रीय सांस्कृतिक परम्परा नहीं हो सकती, जिसके दरवाजे बहुजन समाजके लिअे बन्द हों। वह तो अिनेगिने लोगोंके वैभव-विलास और बाहरी तड़क-भड़ककी चीज ही होती है, और राजवंशोंके अुदय और अस्तकी तरह अुसका भी थोड़े दिनोंमें पतन और नाश हो जाता है।"

कहा जाता है कि समृद्धिके कारण फुरसतका जन्म होता है और अुसके फलस्वरूप कला और संस्कृति फलती-फूलती है। यानी कला और संस्कृतिके विकासके लिअे फुरसत जरूरी है। यह फुरसत मुट्ठीभर लोगोंकी या बड़े जनसमूहकी हो सकती है। अितिहासके हर युगमें अिनेगिने लोगोंका फुरसतवाला वर्ग जनसमुदायके कंधों पर सवार होकर हमेशा मौज अुड़ाता रहा है, और अपने मनो-रंजनके लिअे तथाकथित कला और संस्कृतिकी मांग करता रहा है तथा अुन्हें प्रोत्साहन देता रहा है। अैसी व्यवस्थामें बहुत बड़ा जनसमुदाय अूंचे वर्गके अिन मुट्ठीभर लोगोंके लिअे सतत परिश्रम करता आया है। लेकिन अेक दूसरे प्रकारकी भी कला और संस्कृति है या होनी चाहिये। यह कला और संस्कृति सारी प्रजाकी सच्ची फुरसतमें से होती है। सच पूछा जाय तो अिसे फुरसत कहना ही गलत है। वास्तवमें यह अुदरनिर्वाहके लिअे अीमानदारीसे किये जानेवाले कड़े परिश्रमके बादका — नींदके समयको छोड़कर — जरूरी आरामका समय है। मन अितना ज्यादा थका हुआ नहीं होता, अिसलिअे वह सक्रिय रहता है। अैसा बलवान और दिनके या मौसमके कामसे प्रसन्न बना हुआ मन जीवनमें अपना आनन्द और अपना सुख अपने मौलिक ढंगसे प्रकट करना चाहता है। आधुनिक युगका यह आदर्श है या होना चाहिये और अिसे सिद्ध करनेका अुसे प्रयत्न करना चाहिये। अुदरनिर्वाहके लिअे किये जानेवाले प्रामाणिक और कड़े परिश्रमसे पैदा होनेवाले जीवनके सुख और आनन्दका जिन्होंने पूर्व अनुभव नहीं किया है, अुन लोगों द्वारा विकसित कृत्रिम कला अेक अैसी कला है, जिसने अपनी आत्मा खो दी है और अिसलिअे जो कुदरती तौर पर नष्ट हो जायगी।

फिर, संस्कृति कला और साहित्यकी ही वस्तु नहीं है, यद्यपि यह सच है कि दोनों अपने ध्येयके प्रति वफादार रहें, तो संस्कृतिकी सच्ची सेवा कर सकते हैं। अिसी सम्बन्धमें अप्टन सिंक्लेअरने जाहिर किया था कि आज जो वस्तु कलाके नामसे पहचानी जाती है, अुसका बहुत बड़ा हिस्सा 'धनकी कला' है। जब हमारी जनताको पेट-भर अन्न नहीं मिलता, जरूरी कपड़े नहीं मिलते और रहनेके लिअे अच्छे मकान नहीं मिलते, अैसे समय किसी भी संस्कृतिकी पहली चिन्ता प्राथमिक महत्त्वका काम पहले हाथमें लेनेकी और जीवनदायी अुत्पादक परिश्रमको अपनानेकी होनी चाहिये। बादमें दूसरा सब कुछ अुचित समय पर मिल जायगा। यह अेक मौलिक चीज होगी; भूतकालकी संस्कृतिकी कोरी नकल या परिमार्जित और परिवर्धित आवृत्ति मात्र नहीं। फिर अुसे रंगबिरंगी किरणोंसे, गुलाबी पाअुडर वगैरासे आकर्षक बनानेकी तथा आयु और शरीरके अलग-अलग अवयवोंके अस्वाभाविक कोणों तथा वक्रताओंको छिपानेके लिअे अनेक तरहकी पोशाकें पहननेकी जरूरत नहीं रहेगी। यह तो अैसे लोगों द्वारा की हुअी कला और संस्कृतिकी विकृति है, जिन्होंने जीवनके सन्तोष और सुखका अनुभव नहीं किया लेकिन फिर भी जो अुन प्रेक्षकोंके सामने अुसका दिखावा करना चाहते हैं जो खुद सच्चे सुखी जीवनसे बिलकुल अनभिज्ञ हैं।

अहमदाबाद, १४-४-'५१ मगनभाअी देसाअी

(अंग्रेजीसे)

गूजरात विद्यापीठके प्रकाशन

चुपकी दाद

मौलाना अल्ताफ़हुसेन 'हाली'

अुर्दूके प्रगतिशील कवि हालीका प्रसिद्ध काव्य (नागरी लिपिमें)

कीमत ०–३–०

आधुनिक हिन्दी कविता

संपादक: नानूभाअी का० बारोट

गिरिराज किशोर

आधुनिक युगकी हिन्दी कविताओंका यह सुन्दर संग्रह है। अिसमें कवियोंका संक्षिप्त परिचय और कठिन शब्दार्थ भी दिये गये हैं।

कीमत १–०–०

प्राप्तिस्थान:— नवजीवन कार्यालय

अहमदाबाद–९

विनोबाकी पैदल यात्रा

५

सातवां मुकाम

[ता० १४-३-'५१ : आदिलाबाद : पन्द्रह मील]

पाटणबोरीसे चलकर हमने पेनगंगा पार की। यहां हैदराबादकी सरहद शुरू हुअी। कार्यकर्त्ता हमें लिवा ले जानेके लिअे अुस पार हमारी प्रतीक्षा ही कर रहे थे। दस बजे तक आदिलाबाद पहुंचे। गांवसे करीब अेक मील दूर गांववासी तिरंगा झंडा लेकर विनोबाजीको लेने आये थे। राजके अफसर भी थे। अेक जमाना था जब तिरंगे और वंदेमातरम्‌के लिअे बड़ी भारी कीमत यहां चुकानी पड़ती थी। आज लोग कुछ आजादी अनुभव कर रहे थे। परंतु फिर भी अुनके चेहरों परसे चिंताकी छाया दूर नहीं हुअी थी। वे सुखका अनुभव नहीं कर रहे थे। विनोबाजीने शामकी प्रार्थनामें अिस संबंधमें खास तौर पर कहा : "जब तक मनुष्यकी निजकी आत्मा जाग्रत नहीं होती, तब तक अेक दुःख मिटता है तो दूसरा शुरू हो जाता है। पेशवाओंके राजमें लोग दुःखी थे। अुसके बाद अंग्रेजोंका राज आया। माअुन्ट अेलफिंस्टन पहिला गवर्नर बना। अुसका अितज़ाम देखकर हमारे लोगोंने शुरूमें सुखका अनुभव-सा किया। काम वक्त पर होते थे। न्याय मिलता दिखाअी देता था। कानूनसे काम चलता था। लोग खुश थे। लेकिन थोड़े ही अरसेमें वे दुखी हो अुठे। डॉक्टरी अिलाजमें अेक बिमारी दबती है, तो दूसरी शुरू होती है। हिंसाका भी अैसा ही है। रजाकारोंसे हमको किसने छुड़ाया? हिंसाने! पुलिसने और हथियारोंने!! अुससे हम पराधीन ही रहे। जीवनमें कुछ परिवर्तन ही नहीं हुआ। अिस तरह जीवन कैसे सुखी हो सकता है?"

देशके सामने जो अनेक समस्याअें आज अुपस्थित हैं, अुनका जिक्र करते हुअे अुन्होंने कहा : "समस्याअें देखकर मुझे आश्चर्य नहीं होता। हमारा देश भी तो बहुत बड़ा है। और फिर आजादी आये दिन भी कितने हुअे? जिम्मेदारी भी हम पर अेकाअेक आ गयी। अिसलिअे हमारी देशकी नैया गहरे पानीमें पड़ गयी है। पर अिस सबका हल अेक रामनामके सिवा किसी मानवी प्रयत्नमें है अैसा मैं नहीं मानता।"

फिर रामनामका अर्थ समझाते हुअे कहा : "जो हरिनाम लेगा, वह और कोअी नाम ले ही कैसे सकता है? परमेश्वरकी अुपासना और पैसेकी अुपासना दोनों साथ-साथ नहीं चल सकतीं! अगर आप अपने हृदयमें परमेश्वरको स्थान देते हैं, तो और किसी चीजको स्थान दे ही नहीं सकते।" विनोबाने आगे कहा—"हमारे यहां कितने भेद पड़े हुअे हैं। अुन्होंने हमारा रास्ता रोक रखा है। अगर ये मिटते हैं, तो हमारा रास्ता साफ होता है और देश अेक हो जाता है।"

हैदराबादमें कुल चार पांच भाषाअें चलती हैं—तेलगू, मराठी, कन्नड़ और अुर्दू–हिन्दी। विनोबाने लोगोंको अेक दूसरेकी भाषाओंका अध्ययन करनेकी सलाह दी और कहा : "हिन्दुस्तानमें दुःख तो सब तरफ पड़ा है। जरूरत है सिर्फ सेवामें लग जानेकी। पक्षभेद आदिसे सुरक्षित रहनेकी तरकीब अेक ही है—हरिनाम! हम सब अेक भगवानके पुत्र हैं। 'अमृतस्यपुत्राः'। देह आखिर खाक होनेवाली है। फिर ब्राह्मणकी खाक और हरिजनकी खाक, अैसी पहचान नहीं हो सकेगी। हम देहमें अिसीलिअे आये हैं कि पड़ोसियोंकी, सबकी सेवा करें। परस्पर प्रेम करें। प्रेमभाव बढ़ावें। अिसीमें मानवदेहकी सार्थकता है। और यही हरिनामका अर्थ है।"

सर्वोदय समाजके बारेमें कहा : "लोग कहते हैं अब तक हमें कांग्रेसवालोंसे आशा थी। अब सर्वोदय समाजसे आशा है। यह कैसा भ्रम है? 'सर्वोदय' क्या कोअी अमृतकी पुड़िया है कि खाया और पाया। हमें व्रत लेना होगा कि हम अपने जीवनके लिअे औरोंसे सेवा नहीं लेंगे, बल्कि जितना बन सकेगा औरोंकी ही सेवा करेंगे। यह सर्वोदय समाजकी बुनियाद है। सर्वोदय समाज सबका है। अुसकी सदस्यताके लिअे किसीकी शहादत या गवाही नहीं चाहिये। जिसने कहा कि मुझे सर्वोदयके सिद्धान्त मान्य हैं, वह अुसका सदस्य हो गया।"

अन्तमें, सभामें विनोबाने पुनः अेक बार सब भेद भूलनेको कहा। यहां तक कि 'सर्वोदयवाले और गैर-सर्वोदयवाले—अैसा भी भेद कहीं-कहीं अगर होने लगा हो, तो वह भी भुला देना चाहिये।'

आदिलाबादसे सीधे निर्मल होते हुअे निजामाबाद हैदराबाद जानेका कार्यक्रम था। परन्तु आदिलाबादसे २२ मील पर, पश्चिमकी ओर पहाड़ीके भीतर मांडवी नामक गांवमें पार्वतीबहन कस्तूरबा केन्द्र चला रही हैं। पार्वतीबहनने विनोबाजीसे वहां चलनेका आग्रह किया। और विनोबाने स्वीकृति भी दे दी। साथियोंको अुनके स्वास्थ्यकी बहुत चिन्ता थी, पर बहुत समझाने पर भी विनोबाने प्रोग्राम कायम रखा। मुझे तुकारामकी वे पंक्तियां अिन दिनों नित्य याद आती हैं : "जेथे जातो तेथें तू माझा सांगाती, चालविसी हातीं धरूनिया—जहां जाता हूं, तू मेरा संगाती रहता है, मुझे हाथ पकड़ कर ले चलता है।"

हमारी सर्वोदय यात्रा—यानी चलता फिरता आश्रम ही बन गया है। ३-४५ बजे अुठनेकी घंटी बज जाती है। ठीक परंधामकी तरह। ४-३० को प्रार्थना—अीशावास्य और अधिकरण माला। ठीक ५ बजे कूच। कूचके वक्त कुछ दूर रामधुन। ९ बजेके पहिले-पहिले मुकाम पर पहुंचना। करीब अेक घंटे तक गांववाले जो जमा हो जाते हैं, अुनसे परिचय, कहीं भजन सुनना, आदि। २ तक विश्रांति। २ से ५ तक पत्रव्यवहार, लेखन। ५ से ८ प्रार्थना-प्रवचन-मुलाकातें। ९ बजे सब सो जायं, अैसी अपेक्षा रहती है।

परिस्थिति और स्थानके अनुसार कहीं अिसमें फर्क भी करना पड़ता है। आजकल हर मुकाम पर दूर दूरसे लोग आते हैं, और खासकर स्त्रियां बच्चोंको छोड़कर आती हैं। अिसलिअे अुनकी दृष्टिसे प्रार्थनाका व प्रवचनका कार्यक्रम पांच बजे तक समाप्त कर देना पड़ता है। पत्रव्यवहार भी नियमित नहीं हो पाता। परन्तु काफी होता है, और महत्वपूर्ण होता है! अेक तरफ देशका दर्शन, दूसरी ओर साथियोंका मार्गदर्शन। दोनों साथ-साथ चल रहे हैं। अुस दिन अेक भाअीने देहातके लोगोंकी परिश्रम-निष्ठाके बारेमें पूछा। विनोबाने लिखवाया : "आप लिखते हैं कि गांवके लोग श्रमनिष्ठ तो हैं, लेकिन यह ठीक नहीं है। गांवके लोगोंको श्रम करना पड़ता है, अिसलिअे वे करते हैं। लेकिन अुसमें निष्ठा नहीं होती। वह लाचारी है। निष्ठामें तेजस्विता होती है। श्रमनिष्ठ पुरुष किसीका शोषण नहीं करेगा। और दूसरोंको अपना शोषण करने भी नहीं देगा। शोषण मिटानेके लिअे व्यापक और सर्वांगीण स्वावलम्बन चाहिये जो श्रमनिष्ठासे ही सिद्ध हो सकता है।"

दूसरे अेक सहयोगीको लिखा : "देहातोंमें काम करनेके लिअे देहातमें रहनेवाले लोग ही निकलने चाहियें। अिसके बिना यह प्रश्न हल नहीं हो सकेगा। तब तक बाहरके कुछ लोग काम आ सकते हैं। कार्यकर्त्ताको चाहिये कि वह स्वावलम्बन-विद्या, शिक्षणशास्त्र और निसर्गोपचार, अिन तीन बातोंमें प्रवीण होकर देहातमें जाय। फिर अुसे झूठी गरीबी बाधक नहीं होगी और सच्ची गरीबी रुचे बिना नहीं रहेगी।"

अेक और पत्र देकर यह पत्रोंका पकवान समाप्त करता हूं। "व्यक्तिगत प्रयोग, अुसमें से व्यक्तिगत क्रांति! सामूहिक प्रयोग, अुसमें से सामूहिक क्रांति! सामाजिक प्रयोग, अुसमें से सामाजिक क्रांति! अैसी है हमारी विचार-सरणी। व्यक्ति, समूह और समाज, अिन तीन सीढ़ियोंसे मोक्षकी साधना है। अभी हमारे मित्रोंको

हमारे कार्यकी गंभीरताकी प्रतीति नहीं हुअी। अभी अुन्हें यह चंदरोजा खेल लगता है। अुसमें अुनका दोष नहीं है। हमारे अिसी जन्मके पूर्व-कृत्योंका दोष है। अुसे धो डालने जितनी हमारी तपश्चर्या कहां हुअी है? हरिकृपासे होगी!"

आठवां मुकाम

[ता० १५-३-'५१: कोशलपुर: तेरह मील]

लोग अिसे कुचलापुर कहते हैं। विनोबाने कहा यह कुशलापुर है, जो कोशलपुरसे बना है। रास्तेमें सूंकड़ी पर श्री केशव रेड्डीने विनोबाजीको रोका और गांधीआश्रम बताया। गांवके मदरसेके पास ही अेक हॉलमें गांधीजीकी मूर्तिकी स्थापना की गअी है। केशव रेड्डीको यह मूर्ति प्रेरणा दे रही है कि अब आश्रमका नाम रखा है तो काम शुरू करो।

कोशलपुर बारह सौकी बस्तीका गांव है। जिसमें दो सौ मकान हरिजनोंके हैं। विनोबाजी करीब-करीब हर घरमें हो आये। अेक मुसलमानसे भी भेंट हुअी। मकानको स्वच्छ, साफ़-सुथरा न पाकर अुन्होंने सहज पूछा कि सफाअी कब करते हो? "जुम्मेके जुम्मे" — भाअीने जवाब दिया। अुसे रोजाना सफाअी करनेकी बात समझाकर डेरे पर लौटे। सभाकी तैयारी हो रही थी। बड़ा आंगन था। दो नौकर सफाअीमें लगे हुअे थे। विनोबाने हाथमें झाड़ू लिया और सफाअी शुरू कर दी। फिर तो करीब पचास आदमी जुट पड़े। देखा कि सफाअी ठीक हो रही है, तो पानी छिड़कना शुरू किया। लोगोंने भी घर-घरसे घड़ा लाकर छिड़काव कर दिया। जंगलमें मंगल हो गया। फिर मालूम हुआ कि गांवका हनुमानका मंदिर और कुआं अब तक हरिजनोंके लिअे खुला नहीं है। दोनों स्थानोंका अुद्घाटन हुआ। सवेरे जब विनोबाने ग्रामप्रवेश किया था, तब भी लोगोंने करीब घण्टाभर हरिकीर्तन सुनाया था। प्रार्थनाके समय भजन मंडलियां रास्तेसे मृदंग-पखावजके साथ भजन गाती हुअी आअीं और बड़ी तरतीबके साथ प्रार्थनामें शरीक हुअीं। "जिसने हरिका नाम लिया और नाम लिया न लिया" — भजन भावभरे मधुर कंठसे गाया जा रहा था। मुझे पहिले रोजका आदिलाबादका प्रवचन याद आ रहा था। विनोबाने प्रार्थनामें समझाया:

"अिस छोटेसे गांवमें हरिचर्चा चलती है, यह देखकर मुझे खुशी हुअी। हर गांवमें वह होनी चाहिये। भगवानने मनुष्यको दो बड़ी शक्तियां दी हैं। वाणी और हाथ। वाणीसे भगवानका नाम तो आप लोग लेते ही हैं। पर हाथोंसे भगवानका काम भी होना चाहिये। आप लोग अपना कपड़ा तैयार कीजिये। तब जो भजन आप गाते हैं वह कृतार्थ होगा।"

पहिले सबके लिअे विनोबाने हिन्दीमें भाषण दिया। आसपासके कअी लोग, खासकर स्त्रियां अैसी थीं, जो केवल मराठी समझती थीं। अुनके लिअे खुदने मराठीमें दोहराया। अनेक लोग, खासकर हरिजन भाअी, केवल तेलगू जानते थे। अुनके लिअे श्री वेंकट रेड्डीने तेलगूमें सुनाया। वेंकट रेड्डी आदिलाबादसे साथ हुअे हैं। सर्वोदय सम्मेलनकी ओरसे वे हमारे साथ हैं। वे मंचिरायलके सेवाश्रमके संचालक और निष्ठावान युवक हैं। विनोबाजीके मार्गदर्शनमें अिनका आश्रम चल रहा है।

नवां मुकाम

[ता० १६-३-'५१: मांडवी: दस मील]

श्री बलीराम पटेलने यह गांव बसाया है। अेक जमानेमें बड़े-बड़े गहने और लम्बी-चौड़ी घाघरा-ओढ़नी पहननेवाली बलीराम पटेलकी सहधर्मिणी आजकल गुजराती लिबासमें अेक अत्यंत सुसंस्कृत गृहिणीकी तरह रहती हैं। बलीराम पटेल बंजारे हैं और अुन्होंने बंजारोंका अितिहास लिखा है। अितिहास संशोधककी कुशलता और गहराअीसे लिखी गअी अिस किताबका लेखक केवल चौथी किताब ही पढ़ा हुआ है। चार बरसके परिश्रमसे वह किताब तैयार हुअी है। अपनी व्यापारिक कुशलताके कारण प्रख्यात राजपुतानेकी यह पुरानी जाति आजकल हिन्दुस्तान भरमें जहां तहां फैली हुअी है। अपनी सुधारक वृत्तिके कारण जातिसे बहिष्कृत होकर अनेक दिन अकेले रहकर आखिर बलीराम पटेलने अपने समाजमें करीब अेक हजार घर अपने विचारोंके बना लिये हैं।

गांव छोटासा है। १९४१में बस्ती ९९५ थी। १९५१में ११९५ है। बड़े-बड़े रास्ते हैं। मदरसा है। कस्तूरबा केन्द्रकी ओरसे बालवाड़ी और स्वास्थ्य-सुधार केन्द्र चल रहे हैं। विनोबाने लोगोंसे कहा: "हम तो सीधे हैदराबाद जा रहे थे, परन्तु हमारी लाड़ली बेटी पार्वतीने हमें यहां आनेको कहा तो हमें भी लगा कि अुसका सेवाकार्य देखना चाहिये। और अुस निमित्त आपसे भी दो बातें करनी चाहियें।"

गांववालोंको पूज्य कस्तूरबाका परिचय देते हुअे विनोबाने कहा: "वसिष्ठ और अरुंधतीकी तरह, और राम और सीताकी तरह हमारे देशमें गांधीजी और कस्तूरबाके नाम अमर रहेंगे। अरुंधतीका व्रत था कि पतिके मार्गको रोके बिना पतिके साथ पथक्रमण करना। सीता तो रामकी अिजाजतके बिना ही बनवासमें रामके साथ निकल पड़ी। बा भी जहां-जहां गांधीजी गये, अुनके साथ गअीं। सदा बापूके साथ रहीं और अन्तमें सरकारके साथ लड़ते हुअे सत्याग्रह युद्धमें वे बापूके संग कारावासमें रहीं और वहीं गांधीजीकी गोदमें अुन्होंने प्राण छोड़े। अुनके स्मरणमें सारे देशमें ग्रामसेवाका कार्य हो रहा है। यह केन्द्र आज अेक छोटासा पौधा है। अिसे आप छोटा न समझें। अिसकी ठीक देखभाल करेंगे, तो अुसे आगे अच्छे फूल फल लगेंगे। ज्ञानदेवने कहा है न 'अिवलेसें रोप लावियेलें द्वारीं, त्याचा वेलू गेला गगनावरीं" — छोटीसी बेल लगाअी थी, पर सारे आकाशमें वह फैल गअी।" विनोबाने लोगोंसे अिस काममें पूरी तरह सहयोग देनेको कहा।

शामको गांव देखने भी गये। ९० बरसके अेक गौंड़से भेंट हुअी। वह विनोबाके चरणोंसे लिपट गया। आर्त और भक्त दोनोंका दर्शन अेक साथ हुआ। बोला: "कोअी अिच्छा तो मनमें नहीं रही। अब और कितने दिन बाकी हैं? सब अिच्छाअें पूरी हुअीं। देहको अिसके पहले ही जाना था। पर आपका नाम सुन रखा था। आपके दर्शनोंकी अभिलाषा थी। आज आपने पधारकर अुसे पूरा किया। अब सुखसे मरूंगा।"

लोगोंने बताया कि गौंड जानकार है। गांवभरकी हकीमी करता है। लोग अुसे मानते भी बहुत हैं।

गांवके आखिरी छोर पर गौंडोंके अलगसे ८-१०, मकान हैं। अिकट्ठे रहते हैं। अपनी स्वतंत्रताको खोना नहीं चाहते। तरकारियां थोड़ी बहुत अुगा लेते हैं। दूसरोंसे ज्यादा मिलते-जुलते नहीं। आठ-दस घर मिलकर अेक देहकी तरह रहते हैं। अेक गौंडनके घर गये, तो वह झट भीतर गअी, कुंकुम ले आअी और विनोबाजीके तिलक किया।

प्रार्थनाके बाद श्री बलीराम पटेलने पूछा: "यहां अिर्दगिर्द कुछ देखनेके स्थान हैं। गरम पानीके झरने हैं। मोहोरी देवीका देवस्थान है। और अेक सेवाका केन्द्र है, अनंतपुर। देखकर ही नहीं जाअियेगा? ये स्थान कोअी आपके हैदराबादके राह पर नहीं हैं। जो स्थान हैदराबादके राह पर हों, वहां आप पैदल जाअिये। परन्तु बाजूमें मुड़ना हो, तो वहां वाहनमें बैठनेमें क्या हर्ज है?"

पटेलने काफी जोर देकर तर्कके साथ अपनी बात रखनी चाही, पर वे जितना जितना भी तर्क किये जाते, वातावरणमें विनोद और हंसी ही बढ़ती जाती। आखिर पटेलको विनोबाके निश्चयके सामने हार तो माननी ही थी। पर अुन्होंने कोशिश पूरी-पूरी की।

निकलनेसे पहले विनोबाने केन्द्रके कार्यकर्त्ताओंसे बातें कीं। दो कार्यकर्त्ता यहां हैं। दूसरी बहन, जो स्वास्थ्य-केन्द्रमें मदद करती हैं,

कन्नड़भाषी हैं। कुल सात भाषाएं जानती हैं। पार्वतीबहन और ये काकी — सब अिन्हें काकीके नामसे पहचानते हैं — मां-बेटीकी तरह रहती हैं। 'काकी' गांव भरकी काकी हैं। बंजारोंकी भाषा दोनों अच्छी तरह बोल लेती हैं। अिस भाषामें गुजराती और मारवाड़ी दोनों भाषाओंके शब्दोंका बाहुल्य है। फिर दूसरी भाषाओंके शब्द भी हैं। विनोबाने दोनोंसे नित नया अध्ययन करते रहनेको कहा। "गांवोंमें काम करनेवाली ये बहनें अगर भीतरसे ज्ञान और भावना तथा आनंदका स्रोत नहीं अनुभव करेंगी, तो काम कैसे करेंगी?"

दसवां मुकाम

[ता० १७-३-'५१: तळमड़गू: पन्द्रह मील]

पाटोदाके जंगलों और पहाड़ोंको पार कर हम ग्यारह बजेके करीब तळमड़गूके नजदीक पहुंचे। अुधरसे गांववाले सनअी आदि स्थानीय वाद्योंके साथ जय-जयकार करते हुअे करीब आधे मील दूर आगे निकल आये थे।

तळमड़गूमें कपास काफी होती है। लेकिन कताअी दो-चार जगहोंमें ही होती है। "हर घरमें कताअी क्यों नहीं होती?" विनोबाने पूछा। "कार्यकर्ताका अभाव", यही अेक अुत्तर था। कुछ लोगोंकी माली हालत काफी अच्छी नजर आयी। यहां ज्यादातर रेड्डी लोग ही हैं। अुनमें से कुछ सार्वजनिक काम करना भी चाहते थे। परंतु आम तौर पर जैसे और जगह होता है, यहां भी अपनेसे आगे नजर पहुंचाकर सामुदायिक सुख-दुःखके बारेमें सोचनेकी किसीको फुरसत नहीं। अिसलिअे विनोबाको अिन लोगोंसे कहना पड़ा कि "सारा गांव अपना है अिस भावनासे गांवके बारेमें विचार करना सीखो। गांवमें चारों तरफ कितना दुःख पड़ा है। अिसलिअे और सब भेदभाव भूलकर दुखियोंका दुख मिटानेमें लग जाओ। अिस गांवमें कोअी दुःखी नहीं रहना चाहिये। यह मत देखो कि दुःखी लोग किस जातिके हैं। दुखियोंकी अलग-अलग जातियां नहीं होतीं। वे दुःखी होते हैं — बस यही अुनकी अेक जाति। जैसे सज्जनोंकी भी कोअी अलग जाति नहीं होती। सज्जन, संत सब अेक ही जातिके होते हैं। सज्जन यही अुनकी जाति। और अुसी तरह पापियोंकी भी कोअी अलग जातियां नहीं होतीं। सब पापी 'पापी' ही हैं। मरनेके बाद परमात्मा यह नहीं पूछेगा कि तू ब्राह्मण है या रेड्डी। वह यही पूछेगा कि तूने पाप किया है या पुण्य। यह जो पैसा आप कमाते हैं, वह आपके साथ नहीं आनेवाला है। अिसलिअे आपके पास जो धन है, अुसे सेवामें लगा दीजिये। तभी आप भगवानके सामने खड़े हो सकेंगे।"

ग्यारहवां मुकाम

[ता० १८-३-'५१: गुड़ीहतनूर: १४ मील]

गुड़ीहतनूर पहुंचनेके पहले बीचमें सीतागुंदी पर लोगोंने बड़े समारोहसे स्वागत किया। दो-तीन फर्लांग वे पताकाअें, माला आदि लेकर आये। सीतागुंदी पर सबके लिअे कलेवेका प्रबंध भी किया था। विनोबा नहीं रुके। पर साथियोंने गांववालोंकी ओरसे मिली हुअी जवारीकी रोटियोंको चावसे स्वीकारा। आदिलाबादसे यह स्थान केवल दस मील पर है। वहांसे भी काफी लोग यहां पहुंच गये थे।

गुड़ीहतनूर करीब दस बजे पहुंचे। देहातके बाजे, और गांधीजीकी जय-जयकारके साथ डाक बंगलेमें डेरा रखा गया।

अब आगेका रास्ता पक्की सड़कका था। अब तक हम काफी कच्चे रास्तेसे गुजर चुके थे। "रास्ते अच्छे होनेसे सुभीता तो होता है, परन्तु किनको?" विनोबाने लोगोंसे प्रार्थना सभामें पूछा। "शहरवालोंको, जो आसानीसे देहातमें आकर देहातवालोंको लूट सकते हैं।" विनोबाजीने देहातोंके दर्शनका जिक्र किया: "मांडवीकी ओर देहातोंमें अब भी कुछ धंधे चलते हैं। रंगरेज हैं। चरखे हैं। आटा अभी हाथसे पिसा जाता है। तेलघानियां चलती हैं। लेकिन यह सब कब तक? सड़कें नहीं बनीं तब तक? सड़कें बनी और पूंजीवालोंने आटेकी चक्की लगाअी कि आप लोग फिर अुस चक्कीके गुलाम बन जायंगे।"

घरोंमें चक्की चलती थी तो स्वास्थ्य भी अच्छा रहता था। चक्कीके गीतोंसे घरमें शिक्षणका वातावरण भी बनता था। विनोबाने चक्कीके कुछ गीत भी गाकर सुनाये। मराठी संत-वाङ्मयमें अैसे काफी गीत हैं — "पहिली माझी ओवी, ओवीन जगत्र, गाअीन पवित्र पांडुरंग" — आदि।

"चक्की बन्द हुअी कि ये भजन भी बन्द हो जायंगे। मैं आपको सावधान किये दे रहा हूं। लोग आपकी सेवाके बहाने आवेंगे और आप लुटे जावेंगे।" विनोबाने अन्तमें कहा।

दा० मूं०

शराबबन्दी और कांग्रेस मेनिफेस्टो

नये विधानके अनुसार कुछ महीनोंके बाद चुनाव होगा। सारे देशमें अुसके लिअे तैयारियां हो रही हैं। राजनीतिक दलबन्दियां अपना-अपना काम कर रही हैं। कांग्रेस भी अपना घर संभाल रही है। अखबारोंसे पता चलता है कि वर्किंग कमेटीकी तरफसे चुनावके लिअे 'मेनिफेस्टो' निकलेगा। और अुसका मसविदा बन रहा है। हमारी कांग्रेस सरकारें शराबबन्दीके बारेमें आजकल जिस ढंगसे बरत रही हैं, अुसको देखकर अेक बात मेनिफेस्टोके बारेमें जरूरी मालूम होती है। वह यह कि अुसमें शराबबन्दीकी नीतिके बारेमें साफ किया जाय कि कांग्रेस अुस नीति पर कायम है और अुसका काम बराबर आगे चलायेगी। हरअेक राज्यकी कांग्रेस कमेटियों और जनताको भी यह बात कहनी चाहिये। किसी भी बहाने हमारा देश अिस नीतिसे भ्रष्ट न होना चाहिये।

अिस सम्बन्धमें बिहार प्रांतिक समितिका शराबबन्दी आन्दोलनके खिलाफ जो आदेश है, वह याद आता है। यह आदेश कांग्रेसकी आज्ञा और अनुशासनके विरुद्ध है। अैसा आदेश देनेका अधिकार अुस समितिको नहीं है। यह आदेश अुस समितिको तुरन्त वापस ले लेना चाहिये। वर्किंग कमेटीको भी चाहिये कि वह अिस बारेमें अुसको पूछे। कांग्रेसकी चंद बुनियादी बातोंके अनुशासनको अिस तरह कोअी कैसे भंग कर सकता है? दूसरे चंद प्रांतोंमें शराब-आमदनी-समितियोंका कायम होना और बिहारमें अैसा अनुशासनको भंग करनेवाला आदेश निकलना यह बताता है कि मेनिफेस्टोमें हमारी शराबबन्दीकी नीतिको फिरसे साफ शब्दोंमें जाहिर करना कितना जरूरी बन जाता है। नहीं तो कांग्रेसका नीचे गिरना "अधोऽधो गंगेयम्" — चालू रहेगा।

अहमदाबाद, १०-४-'५१ मगनभाअी देसाअी

भूल सुधार

"विनोबाकी पैदल यात्रा — ३" लेखमें (हरिजनसेवक, ७-४-'५१) पृष्ठ ४७ के कालम दोकी ३२ वीं और ३३वीं पंक्तिमें 'बीघा' की जगह 'गुंठा' पढ़िये।

वर्धा, १४-४-'५१ कि० घ० म०

विषय-सूची

		पृष्ठ
गोवधके खिलाफ अुपवास	कि० घ० मशरूवाला	५७
नियंत्रणके खिलाफ फरियाद	अेक किसान	५८
बनारसकी हरिजन-बस्तियां	वियोगी हरि	५८
नियंत्रण और मापबन्दी	कि० घ० मशरूवाला	६०
खुराक और संस्कृति	मगनभाअी देसाअी	६१
विनोबाकी पैदल यात्रा — ५	दा० मूं०	६२
शराबबन्दी और कांग्रेस मेनिफेस्टो	मगनभाअी देसाअी	६४
टिप्पणियां:		
"सर्वोदय यात्रा"	कि० घ० म०	५८
हम क्या करें?	म० देसाअी	५९
कपासकी घरेलू अुपज	दादाभाअी नाअिक	५९
"जि कियू जि सोकु"	अुचियामा गीअीचि	५९